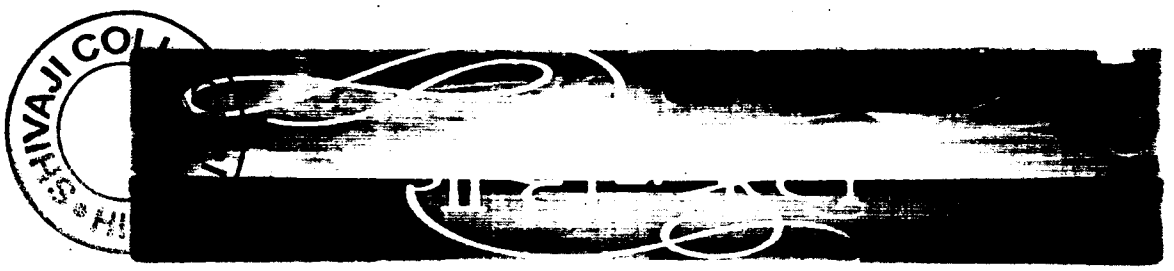

Shodh-Rityu त्रिमाही शोध–पत्रिका
PEER Reviewed & Refereed JOURNAL
ISSUE- webinar special IMPACT FACTOR - SJIF-6.586, IIFS-4.125, ISSN-2454-6283
AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

अंतरराष्ट्रीय [illegible] बहु शास्त्रीय शोध-पत्रिका

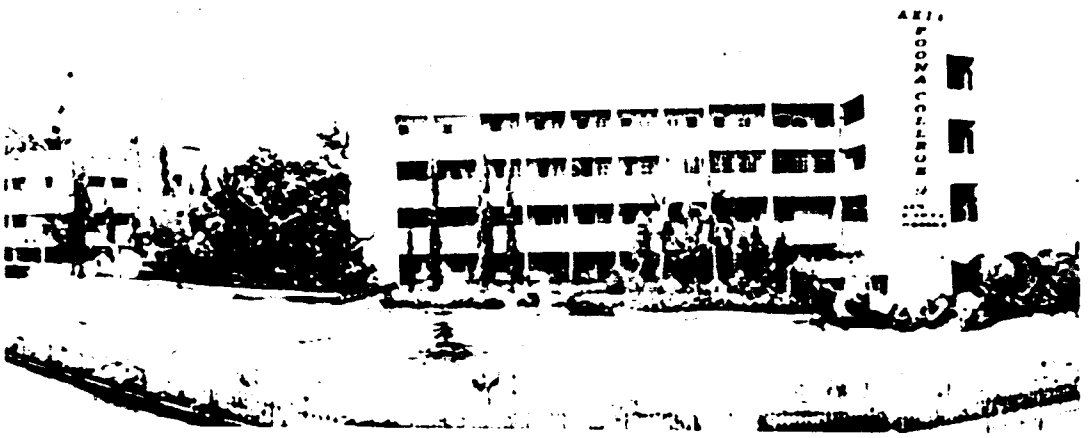

पूना कॉलेज, पूना, अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी, इक्कीसवी सदी में हिंदी साहित्य और मिडिया का बदलता स्वरूप 06 मार्च, 2020
वेबीनार विशेषांक प्रकाशन दिनांक–रविवार, 15 अगस्त 2021

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Dist. Hingoli

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

शोध ऋतु

Shodh-Rityu तिमाही शोध–पत्रिका
PEER Reviewed & Refereed JOURNAL

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी
इक्कीसवी सदी में हिंदी साहित्य और मिडिया का बदलता स्वरूप
06 मार्च, 2020

ISSUE- webinar special IMPACT FACTOR - SJIF-6.586, IIFS-4.125, ISSN-2454-6283

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

वेबीनर विशेषांक प्रकाशन दिनांक–रविवार, 15 अगस्त, 2021

सम्पादक
डॉ.सुनील जाधव ,नांदेड
9405384672

तकनीकी सम्पादक
अनिल जाधव, मुंबई

पत्राचार हेतु पता–
महाराणा प्रताप हाउसिंग सोसाइटी, हनुमान गढ़ कमान के सामने, नांदेड–431605

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

79.इक्कीसवी सदी में मीडिया का बदलता स्वरुप–*प्रा.विद्या बाबूराव खाडे*.....192
80–21 वीं सदी में साहित्य का बदलता स्वरूप–*मुमताज इमाम पठाण*.....194
81–वैश्वीकरण का प्रतिबिंब : 'दौड़'उपन्यास में परिवर्तित नारी जीवनमूल्य–*डॉ.कामायनी गजानन सुर्वे*.....196
82.इक्कीसवी सदी में मीडिया का बदलता स्वरूप–*नागीले मनिषा जनार्धन* ;.....199
83.इक्कीसवीं सदी का महिला कथालेखन–*डॉ.शेख शहेनाज अहेमद*.....202
84–सोशल मीडिया पर हिंदी साहित्य का स्वरूप–*प्रा. वसुंधरा काशीकर*.....205
85. 21 वी सदी में मीडिया का बदलता स्वरूप–*प्रा. स्वाती विष्णू चव्हाण*.....207
86.सोशल मीडिया और साहित्य का बदलता स्वरूप–*प्रा. डॉ. सुरेखा प्रेमचंद मंत्री*.....210
87. हिंदी भाषा के विकास में संचार माध्यमो का योगदान–*प्रा.सौ. सूर्यवंशी सुनिता रविंद्र*.....212
88.इक्कीसवी सदी के हिंदी कविता में नारी विमर्श–*डॉ. शिला महादू धूले*.....215
89.साहित्य एवं मिडीया का समाज पर प्रभाव–*डॉ. सुभाष सोनाजी जिते*.....217
90.इक्कीसवीं सदी में साहित्य का बदलता स्वरूप–*स. प्रा. प्रकाश आनंदा लहाने*.....219
91.'समय सरगम' उपन्यास में कृष्द विमर्श–प्रा.डॉ.वसीम मक्रानी.....221
92.सोशल मीडिया का समाज पर प्रभाव–*प्रा. डॉ. रविता बलभीम कावळे*.....223
93–संदेह के घेरे में–*डॉ. सुनीता मोटे*,.....226

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

के बदलाव को देखना अनिवार्य हो रहा है। इस खतरे को समय पर पहचानकर व्यावसायिकता के असर से होने वाले बदलाव के बीच मीडिया को पुन देश हित में मानवीय की रक्षा हेतु मूल्यों की नैतिकता और सिद्धांतों को स्थापित करने के मार्ग पर चलना आवश्यक बन गया है। तभी एक बेहतर वैश्विक समाज की स्थापना कर लोक की सामाजिक संवेदनाओं और सरोकारों को बचाया जा सकता है।

संदर्भ –

1. मीडिया और मूल्य – कुछ विचारणीय प्रश्न – डॉ ज्योति सिंह – शब्दब्रम्ह (17 जनवरी 2013) पृ.35
2. अक्षरा – सितम्बर – अक्तूबर 2015 पृ.129
3. अक्षरा मार्च–एप्रिल 2009 पृ.58
4. मीडिया डॉट कॉम 4 समाचार 23 अक्तूबर 2019
5. मीडिया और बाजार – संपा. वर्तिका नंदा – सामायिक प्रकाशन, नई दिल्ली
6. मीडिया और बाजार – संपा. वर्तिका नंदा – सामायिक प्रकाशन, नई दिल्ली
7. साहित्य आजतक – जुलाई 2019

इक्कीसवीं सदी की स्त्री कविता का समाजशास्त्र

डॉ. सुधीर गणेशराव वाघ
शिवाजी महाविद्यालय ,हिंगोली

साहित्य के समाजशास्त्र की शाखाओं का विकास बीसवी शताब्दी की देन है। इक्कीसवीं सदी में निरंतर विकास की ओर अग्रसर है। अबतक साहित्य की विभिन्न विधाओं मे समाजशास्त्र का जो विकास हुआ उनमें उपन्यास और नाटक सबसे अधिक विकसित हुए है। कहानी का समाजशास्त्र भी विकास की ओर अग्रसर है। किन्तु कविता का समाजशास्त्र सबसे कम विकसित हुआ है। प्रो. मैनेजर पाण्डेय ने साहित्य के समाजशास्त्र पर एक महत्वपूर्ण और स्तरीय ग्रंथ लिखा है श्साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिकाश् जिसमें उन्होने लिखा है कि ष्कविता के समाजशास्त्र के विकास के लिए जरूरी है कि कविता के विशिष्ट स्वरूप, उसकी बनावट और कला की बारिकियों में उतर कर उसकी ऐतिहासिकता और सामाजिकता की खोज करणें में सक्षम पध्दती का विकास हो। केवल कविता की विषय वस्तु कवि के दृष्टिकोन, समाज के संदर्भ, घटनांओं के संकेत और कविता की विचारधारा की खोज या फिर रचना के सामाजिक परिवेश और प्रभाव का विवेचन करनेवाली समाजशास्त्रीय दृष्टी से कविता के सार्थक समाजशास्त्र का विकास न होगा। कविता के समाजशास्त्र के लिए यह सब आवश्यक है, लेकीन पर्याप्त नही कविता की आत्मपरकता और भाषिक संवेदनशीलता में निहित सामाजिकता की पहचान करनेवाले समाजशास्त्रीय दृष्टीकोन का विकास जरूरी है।ष

इक्कीसवीं सदी प्रगति की सदी है। चारों और नई–नई क्रांतियां जन्म ले रहीं है। चाहे वह क्षेत्र उद्योग का हो या शिक्षा का हो या फिर तकनिकी का हो इस क्रांति फलस्वरुप समाज प्रगति की ओर अग्रसर हुआ दिखाई देता है। भूमंडलीकरण,औद्योगिकरण, प्रोद्योगिकी, वैज्ञानिकता, उपभोक्तावाद, पर्यावरण प्रदुषण, आतंकवाद, साम्प्रदायिकता, पूँजीवाद तथा बाजारीकरण आदि के दौर में इक्कीसवीं सदी की हिंदी महिला रचनाकारों पर पुनर्विचार करना आवश्यक है। इससे महिला रचनाकारों के काव्यसृजन के विषय में जरूरी नतीजे

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

निकलते जा रहे हैं। पुरुष प्रधान संस्कृति का प्रतिरोध करती है निर्मला पुतुल की कविता में अभिव्यक्त स्त्री जीवन के संपूर्ण व्याकरण को समेटते हुए परम्परागत दृष्टि का विरोध करते हुए कहती है:–

" क्या तुम जानते हो
एक स्त्री के समस्त रिश्ते का व्याकरण?
बता सकते हो की तुम, एक स्त्री को स्त्री–दृष्टि से देखने
उसके स्त्रीत्व की परिभाषा?
अगर नहीं, तो फिर क्या जानते हो तुम
रसोई और बिस्तर के गणित से परे
एक स्त्री के बारें में।"

भारतीय समाज में आज की स्त्री अन्याय अत्याचार से मुक्त होना चाहती है। वह अपने अधिकारों को प्राप्त करना चाहती है। इक्कीसवीं सदी की प्रमुख कवियत्रींयों में सविता सिंह, रेखा मैत्र, आशा प्रभात, सुनिता जोशी, सुधा, निर्मला गर्ग, सुशिला टाकभौर, निर्मला पुतल, मधु गुप्ता, रमणिका गुप्ता, आदि लेखिकाएं है। इन गिनी–चुनी कवयित्रियों ने पिछले कुछ वर्षों की सशक्त हिन्दी कविता में जो कार्य संभव किया है उनमें कात्यायनी का नाम आग्रणी है। इन कवयित्रियों की प्रगतिशील दृष्टि के साथ सामाजिक, राजनीतिक परिवर्तन की प्रक्रिया में आस्था रखती है। इसलिए यथास्थिती के प्रति एक विद्रोह इनकी कविताओं में प्राय: मिलता है। **श्सात भाईयों के बीचश्** की सर्वप्रथम कविता से ही अपनी विद्रोही स्त्री द्वारा कात्यायनी स्थापित सत्ता को चुनौती देती है। कविता की शीर्षक है –श्इस स्त्री से डरोश् में कवयित्री कहती है कि जहाँ बन्धनों से जकडी हुई एक साधारण स्त्री के भीतर आजादी का एक अनन्त मानवीस स्पेस है। जेसे –

यही स्त्री
सब कुछ जानती है।
पिंजर के बारे में
जाल के बारे में
यंत्रणा गृहों के बारे में।[1]

आज के समय में स्त्री व्यक्तित्व को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक दृष्टि से लोकतांत्रिक पुन:स्थापना की जरूरत है। सामाजिक व्यवस्था को देखे बिना नियम बताने से सत्तात्मक श्क्तियों का निवारण नहीं हो पायेगा। मानवहित की महत्ता को समझती हुई, संजोती हुई आज की कवयित्री इस समाज के सभी स्तरों पर विद्यमान असमानताओं पर बोलती है। सामाजिक रूप में असुरक्षित स्त्री की सामाजिकता को लेकर हमारी व्याख्या में जो गलतियॉं है, कमियॉं है, उसको पुनर्परिभाषित करने का कार्य कात्यायनी ने निम्न पंक्तियों में किया है–

हम पढते हैं
अपने सामाजिक प्राणी होने के बारे में।
हम होते हैं
एक सामाजिक प्राणी ।
बचा रह जाता है
बस जानना
एक सामाजिक प्राणी होने के बारे में।[2]

बुनियादी तौर पर कात्यायनी की कविता से यह जाना जा सकता है कि वे जुझारू चेतना की कवयित्री हैं। उनकी कविता में स्त्री संघर्ष के स्वरों तथा स्त्री की मुक्ति की कामना को भी पहचाना जा सकता है। उनकी स्त्रियॉं विद्रोही, जुझारू, जागरूक, आत्मसम्मान से युक्त बुद्धिजीवीं स्त्रियॉं है। कात्यायनी की कविता हमारे समाज के सामाजिक, राजनितिक, सांस्कशितिक परिवेश में स्थित है और इस परिवेश में स्त्री की स्थिती पर विशेष रूप से ध्यान केन्द्रित है। उनकी कविता में विशेष किस्म की ताजगी है, क्योंकि उन्होंने अपनी कविता में कथित वैश्विक समाज के विशिष्ट बिम्ब सृजित किए हैं। सामाजिक परिस्थितीयों के दमन का उद्घाटन उनकी कविता की शक्ति है। उन्हांने अपनी कविता में हमारे समाज की स्त्री की स्थिती पर बडे वस्तुगत और सटीक ढंग से फोकस किया है। न सिर्फ अपनी सामाजिक सक्रियता, वरन अपनी कविता द्वारा कात्यायनी मौजूदा मानव विरोधी माहौल का सशक्त प्रतिरोध करती हैं।

इक्कीसवीं सदी के दौर में जब स्त्री कविता अपनी मुखरता का परिचय देती है तो हमें स्त्री कविता की पृष्ठभूमि की तरफ ध्यान देना होगा। सामाजिक अन्याय के विरूद्ध, असांस्कृतिक कारवाईयों के विरूद्ध समय–समय पर स्त्री लेखिकाओं ने अपनी कविता के माध्यम से सार्थक भूमिकाएँ निभाई हैं। वह इतना

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

जरूर पहचानी है कि हमारा स्वत्व, परिवार, अधिकार, राजनीति, परंपरा, संवेदना, नैतिक दृष्टी, लैंगिकता तथा स्वतंत्रता सम्बन्धी संकल्पनाएँ आदि पुरूषकेन्द्रित हैं यानि अधिकार केन्द्रित हैं। इसलिए वह इसके बरक्स एक प्रतिसंस्कृति सृजित करना चाहती है। इक्कीसवीं सदी की स्त्री कविता अपना एक संसार सृजित कर रही है। वह अपने को अलगाने के लिए नहीं बल्कि अपने को रेखांकित करने के लिए हैं। इसके पहले जिसे अनदेखा किया गया उसी को वह देखना और दिखाना चाहती है। अनामिका की एक कविता सेफ्टीपिन इस अवसर पर विचारणीय है। –

इमर्जेन्सी वॉर्ड में
डॉक्टर की जो हैसियत होती है –
सावित्री पाठक के हौडाए वस्तु–जगत में
इस सेफ्टी पिन की वही हैसियत थी!
क्या जाने कितनी आपानकालीन स्थितीयॉ
उसने सँभाली थी एकदम अकेले![3]

यह कविता सावित्री पाठक की चुडियों में लटका हुआ सेफ्टीपिन उसके जीवन संघर्ष को प्रस्तुत करता है। एक साधारण स्त्री अपने मामूली जीवन में संघर्ष करती है। इस कविता में स्त्री का आत्मविनोद और अन्तर्व्यथा सबकुछ मौजूद हैं। अनामिका के स्त्री विमर्श में वह विद्रोही नारी नहीं है जो गृहस्थ जीवन को तोडकर अपनी मुक्ति ढूँढ रही है, बल्कि वह घर–परिवार तथा समाज को साथ लेकर चल रही है। उन्होंने अपनी कविताओं में घर, परिवार, समाज, राजनीतिक, आर्थिक तथा धार्मिक अन्तर्विरोधों को उजागर किया है। यह दश्ष्टी कवयित्री को सामाजिक बोध से प्राप्त हुई है।

इक्कीसवीं सदी की स्त्री कवयित्रियों में गगन गिल महत्त्वपूर्ण हैं। आज के समय में उनकी उपस्थिती न सिर्फ महत्त्वपूर्ण है बल्कि कविता के समाजशास्त्रीय मूल्यांकन के लिए भी एक नई चुनौती है। उनकी कविताएँ हिंसक समाज में जीती युवती के स्वप्न और दुःस्वप्न से सम्बन्धित हैं। साथही अनेक कविताएँ स्त्री की बहुविध संकटग्रस्त स्थितीयों के संकेत से भी भरी पडी हैं। गगन गिल को अपनी वेदना को छिपाकर जीना असंभव ही नहीं बल्कि अनैतिक भी हो जाता है। हिंदी में स्त्री लेखन हमेशा भारतीय सामाजिकता की खासियत से ओतप्रात रहा है। अपनीयत पर सोचती कवयित्री हमेशा दूसरे ही पल में सामाजिकता पर नजर डालती है, विशेष कर स्त्री पुरूष सामंजस्य पर। मसलन –

तुम नहीं होगे
तो हम नहीं होंगे
हम नहीं होंगे
तो दुनिया नहीं होगी।

अतः इसमें कोई शक नहीं कि हिंदी का स्त्री लेखन अपने सामाजिक पक्ष में दुनिया और दुनियादारी के अधिकार और वर्चस्व पर सवाल करके उसे समानता की राहों तक पहुँचाने के संकल्पों पर अग्रसर हैं।

इक्कीसवीं सदी की कविताओं में सामाजिक, सामुदायिक पहचान सूचित करने की शक्ति मौजूद है। स्त्री कविता अपनी कार्यसूची में घर–परिवार–समाज सबको जोडने की कोशिश में है।

सदियों से आज तक पुरुष की स्त्री की ओर देखने की दृष्टि नहीं बदली। इक्कीसवीं सदी की हिन्दी कवियत्री इस पुरुषी मानसीकता का प्रखर विरोध करती है। आज की लडकी पढ लिखकर अपनी योग्यता सिध्द करना चाहती है। अपनी पहचान स्वयं बनाना चाहती है। आशा प्रभा की कविता 'लडकी,देह और खयाल' कविता में एक लडकी की संवेदनशील मनोव्यथा को चित्रीत करते हुए लिखती है–

"क्यों उपस्थित हो जाती है
उसी देह हर जगह
जबकी दिखाना चाहती है वह वहॉ
अपना हुनर, अपनी काबिलियत
लेकिन, हमेशा आडे आ जाती है
उसकी देह .....
सब गौण हो जाता है
इस कमब्ख्त देह के आगे
सोचती लडकी
किस अदृश्य नकाब के पिदे
छिपाया वह इस देह को"

पढ लिखकर काम करने वाली स्त्री के अर्न्तमन को चित्रीत किया गया है। घबराहट की यह आन्दरूनी दुनिया एक स्त्री कविता ही

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

सृजित कर सकती है। पर घबराहट को दूर करने का संकेत भी कविता में है।

परिवर्तनों ने स्त्री समस्याओं को भी बदल दिया हे। आत्मभिव्यक्ति का अवसर आज की स्त्रियों को प्राप्त होने के कारण उसके स्वरूप में भी बदलाव हुआ है। यद्यपि कभी–कभी अन्य आन्दोलन के समान स्त्री लेखन में उग्रवादी या विद्रोही चिन्तन के पुट छलक उठें। ममता कालिया की आधुनिक स्त्री कहती हें –

"पैंतीस साल मैने सेवा की तुम्हारी
सुबह, शाम, आठों याम
तुम्हें गुड्डे की तरह संजोया
अपने मंगलसूत्र में मनके–सा पिरोया
थे तो तुम छह फुटे, तगडे और तेजस्वी
मैंने तुम्हें रखा ज्यों कपास का फोया।"

मधु गुप्ता कृत 'यथार्थ का धरातल' काव्य संग्रह में स्त्री संवेदना तथा सामाजिक सरोकारो की तीक्ष्णता उद्घाटित हुई है। उनकी नारी उडान कविता में संघर्षशिल भारतीय स्त्री की जीवंत छवि चित्रीत हुई है। आधुनिक युग में स्त्री ने प्रत्येक क्षेत्र में अपना वर्चस्व स्थापित किया है। चेतित हो उठी स्त्री प्रबल विरोधों के बावजुद अब रुकना नहीं चाहती । चांद पर परचम लहराने की कामना रखनेवाली उसकी उडान को वाणी देते हुए मधु गुप्ता लिखती है–

"चल पडी है नारी अब न रुकेगी
आज उठी है नारी, अब न झुकेगी
चॉद पर पहुंचकर परचम लहराया,
अपना वर्चस्व सबको बताया,
कौन कहता है नारी, पीछे है नर से?
वो आगे है। हर परचम से।"

इक्कीसवीं सदीं की हिन्दी कविता अपने युगीन विसंगतियों पर असहमती दर्शाते हुए वक्त की प्रवक्ता बनकर अपने युग को प्रबलता के साथ व्यक्त करती है। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि, इक्कीसवीं सदी की स्त्री कविता का समाजशास्त्रीय विश्लेषण अपने आप में एक उत्तेजक अनुभव है। उन्होंने अपने समय की समाजव्यवस्था, सामाजिक विसंगति, राजनीतिक विद्रूपता, धार्मिक प्रवंचना तथा सांस्कृतिक छल को जिस ढंग से उद्घाटित किया है, वह अपने आप में एक विशिष्ट काव्यात्मक उपलब्धि है। आज की स्त्री कविता गैर–सामाजिक होकर नहीं, बल्कि अधिक से अधिक सामाजिक होकर अपनी उपस्थिती दर्ज कर रहीं है। जिन कवयित्रियों ने अपने को सामाजिक सरोकारों के विषयों से लम्बे समय तक अपने को दूर रखा, वे भी अन्ततः आज हिंदी कविता की सामूहिक–सामाजिक जिम्मेदारी में शरीक हुई है, हो रहीं है। पुरूष वर्चस्ववादी तमाम उपहासों के बावजूद उनके काव्य में नयापन और तीखापन उजागर होता है।

संदर्भ सूची –

1) कात्यायनी, सात भाईयों के बीच चंपा – वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली. प्र. सं.1994, पृ.सं. 13.
2) कात्यायनी, इस पौरूषपूर्ण समय में, परिकल्पना प्रकाशन, द्वितिय सं. 2008 पृ.सं. 96.
3) अनामिका, दूब–धान, भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली प्र. सं. 2007, पृ.सं. 56.

PRINCIPAL
Shivaji College,Hingoli.
Tq.& Dist.Hingoli.(MS.)